विचार बिन्दु

सच्चे वीर को युद्ध में मृत्यु से जितना कष्ट नहीं होता उससे कहीं अधिक कष्ट कायर को युद्ध के भय से होता है।

–भतृहरि

किसान अन्नदाता है पर प्राणदाता नहीं

किसान आंदोलन को चलते-चलते एक वर्ष हो गया और इस आंदोलन ने कोरोना की अवधि में कोढ़ में खाज का काम किया है। एक तरफ केन्द्र सरकार 80 करोड़ देशवासियों को कोरोना के कारण मुफ्त राशन दे रही है और दूसरी ओर किसान अड़े बैठे हैं, देश का हज़ारों करोड़ का नुकसान कर के। संपन्न किसान स्वयं तो खेती करते नहीं, मज़दूरों से कराते हैं, जो उनका काम संभाल ही रहे हैं। आंदोलन उनके लिये एक राजनीतिक खेल है जिसे वे खेल रहे हैं। कनाडा आदि से ही नहीं कुछ अन्य देशों से भी विदेशी धन आता रहा है और ये विदेशी ताकतें विपक्ष की भूमिका निभा रही हैं। देश को अस्थिर करने के प्रयास होते ही रहते हैं। देश का विपक्ष भी इसका राजनीतिक लाभ उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता। पाकिस्तान व खालिस्तान समर्थक नारे व झंडे भी मीडिया में आते रहे हैं। इस देश को इसी देश के रहने वाले कभी भी, किसी भी मुद्दे पर बंधक बना सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट भी मौन रहता है। कानून-व्यवस्था की बात को लेकर सरकार कार्रवाई करती है तो कभी वह प्रतिशोधात्मक हो जाता है या मानवाधिकार का उल्लंघन। किसान आंदोलन की ही तरह शाही बाग के सी.ए.ए. विरोधी आंदोलन में भी देहलीवासियों को शारीरिक, मानसिक व आर्थिक प्रताड़ना दी। महिनों तक रास्ते बंद रहे, लोगों को घूम कर जाना पड़ता और कई बार जा ही नहीं पाते। व्यापार अवरुद्ध रहा, करोड़ों का नुकसान हुआ। हर ग़ैर ज़िम्मेदाराना हरक़त निज़ामुद्दीन मरकज़, शाहीनबाग आंदोलन, किसान आंदोलन, गुर्जर, जाट और पटेल तथा मराठा आरक्षण आंदोलन देश को, उसके विकास को अवरुद्ध ही नहीं, पीछे धकेलते रहते हैं और विपक्ष इन सभी के साथ खड़ा हो जाता है, वह उचित हो या अनुचित। संसद में बहस नहीं होती, सड़क पर 'खेला' करके सड़कें जाम करने के आदी हो गये हैं हम। घर फूँक तमाशा देखने में विश्वास करते हैं हम।

पहला प्रश्न तो यही है कि क्या ये आंदोलनकारी वास्तव में किसान हैं? उनके रवैये से तो ऐसा नहीं लगता। उनकी कुछ ही नहीं सभी माँगें मान ली गईं तो उन्होंने माँगें और जोड़ दीं। उसके पूर्व वार्ता के कितने ही दौर हुए पर रुख आंदोलनकारियों का अड़ियल ही रहा। सारे देश में तो आंदोलन नहीं हुआ। क्या पंजाब और पश्चिमी यू.पी. के किसान ही किसान हैं? क्या कई किसान संगठनों ने इसका समर्थन नहीं किया? क्या उन्हें यह बिचौलियों से मुक्ति नहीं दिलाता था? क्या यह किसानों की संपन्नता की ओर कदम नहीं था? निश्चय ही इस बात की तो प्रशंसा करनी ही होगी कि सरकार ने आंदोलन से उत्पन्न अनेक परेशानियों के बावजूद असीम धैर्य रखा। किसान आंदोलन उग्र व हिंसक हुआ, लाल किले पर उन्होंने अप्रिय घटना की परंतु सरकार ने बल प्रयोग नहीं किया, हाँ सुरक्षात्मक कार्रवाई अवश्य की, जो आवश्यक थी। लखीमपुर खीरी की घटना में भी किसानों का उग्र प्रदर्शन अशोभनीय ही था और ऐसे उग्र प्रदर्शन में कई पक्षों की हानि होती ही है, जान की भी व माल की भी।

नवीनतम समाचारों के अनुसार किसानों की अतिरिक्त 6 मांगों को मान लेने पर भी किसान अड़े हुए हैं। द्रोपदी का चीर हो गया है, किसान आंदोलन। सरकार जितनी सहिष्णुता व उदारता दिखाती है, आंदोलन उतना ही उपसहिष्णु और स्वार्थी होता है। कारण स्पष्ट है। महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण ने द्रोपदी के सतीत्व की रक्षा के लिए चीर बढ़ाया और इस तथाकथित किसान आंदोलन में आंदोलन का चीर राजनेताओं ने पकड़ लिया है और वे वास्तव में सरकार का चीरहरण करना चाहते हैं। चीर हरण आंदोलन का नहीं सरकार को अस्थिर करने हेतु है।

नवीनतम समाचारों के अनुसार किसानों की अतिरिक्त 6 मांगों को मान लेने पर भी किसान अड़े हुए हैं। द्रोपदी का चीर हो गया है, किसान आंदोलन। सरकार जितनी सहिष्णुता व उदारता दिखाती है, आंदोलन उतना ही उपसहिष्णु और स्वार्थी होता है।

कोरोना की अवधि में सरकार के राजस्व की आय के साधन रहे नहीं। धरनों और आंदोलनों से टोल टेक्स की भी हज़ारों करोड़ की हानि हुई। पेट्रोल, डीज़ल का उत्पादन तेल उत्पादक देशों के कारण कम हुआ, लागत बढ़ी तो दाम भी बढ़ेंगे ही। साथ ही उसमें अधिकांश विपक्ष की सरकारों ने अपने टेक्स न घटाकर केन्द्र पर ही दोष मढ़ दिया। कोरोना की अवधि में आय न हो, कम ही कम हो तो महँगाई भी स्वाभाविक है। पेट्रोल-डीज़ल बचाने के तो जनता के पास विकल्प भी हैं। हाँ, उसका अप्रत्यक्ष प्रभाव अन्य वस्तुओं पर तो पड़ेगा ही। और उसको अतिरिक्त विपक्ष का असहयोग और मात्र आंदोलन को बढ़ावा और अब महँगाई के खिलाफ रैली। विपक्ष की सरकारों में तो जैसे सतयुग ही था और अब कलियुग आ गया है। यह हमारे देश की दुर्भाग्यपूर्ण परम्परा बन गई है कि विपक्ष हमेशा हर बात का विरोध ही करे, भले ही कोई मुद्दा देश के हित में ही क्यों न हो।

अधिकांश किसानों के खेतों में मज़दूर सहायता करते हैं, उनके बारे में कोई क्यों नहीं सोचता? अधिकांश राजनेताओं और उनके परिवार व सगे-संबंधियों के पास बड़ी-बड़ी ज़मीनें हैं। वे सबसे संपन्नतर होते जा रहे हैं और कृषि मज़दूर गरीब ही हैं। यह आंदोलन उन संपन्न किसानों का आंदोलन है। एम.एस.पी. (न्यूनतम समर्थन मूल्य) कुछ वस्तुओं-जिन्सों का हो सकता है, परंतु हर एक वस्तु या जिन्स का नहीं हो सकता और न होगा। अगर यह हो सकता है तो अभी तक हो जाता और वर्तमान विपक्ष की पूर्व सरकारों के समय क्यों नहीं हुआ? बाज़ार माँग व पूर्ति के आधार पर चलेगा ही। शीघ्र नष्ट होने वाली साग-सब्जियों, उनकी अच्छी-खराब फसल, आवश्यकता से अधिक या कम उत्पादन भी घटक बने रहेंगे। उपाय तो खाद, बीज, भंडारण की सुविधा व फसल बीमा आदि हैं, जो सरकार कर रही है।

हमें यह भी याद रखना होगा कि किसान अन्नदाता तो है पर वह प्राणदाता नहीं है। किसान महत्वपूर्ण है तो मज़दूर भी, शिक्षक भी और चिकित्सक भी, वैज्ञानिक भी और इंजीनियर तथा प्रशासक भी, उद्योग और व्यवसाय भी, अत: इस देश की प्रगति, विकास और आर्थिक उन्नति मात्र किसानों के बलबूते पर नहीं है। यूँ भी देश का परिदृश्य बदला है। कृषि के बजाय उद्योग-व्यवसाय का प्रतिशत बढ़ा है। कृषि भी स्वयं न करके मज़दूरी पर हो रही है। कृषि एक अतिरिक्त व्यवसाय के रूप में होता जा रहा है। औद्योगिक घराने, राजनेता व प्रशासक बड़ी-बड़ी ज़मीनें खरीदते हैं। कृषि पर दुनिया भर की सबसिडी खाद, बीज व अन्य सुविधाओं पर दी जा रही है। सहज ऋण व कम ब्याज ही नहीं ऋण माफी की लत भी सरकार ने किसानों को डाल दी है। नकद राशि भी उनके खाते में पहुँच रही है। और इस सबका सर्वाधिक लाभ संपन्न किसान, राजनेता और प्रशासक उठा रहे हैं। यह सब आंदोलन इन्हीं संपन्न किसानों द्वारा समर्थित है। क्या बड़े-बड़े किसानों की आय पर आयकर लगाना उचित नहीं है? यही इस सब खुराफात की जड़ है। जनता का एक वर्ग ऐसा भी है जो समझता है कि सरकार को कतई नहीं झुकना चाहिये था क्योंकि यह आंदोलन ही मूलत: किसानों का है ही नहीं। कई किसान संगठन इन कानूनों से संतुष्ट थे। सरकार का यह कथन सही हो सकता है कि वह अपना पक्ष पूरी तरह समझा नहीं पाई और यह भी कटु सत्य है कि नकारात्मक विपक्षी राजनीति में वह संभव होता भी नहीं है। सरकार की भारतीय लोकतंत्र की दुर्बलताओं के आगे निर्वाचन संबंधी कई मज़बूरियाँ भी हैं ही। एक पक्ष और है पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश मूलत: गेहूँ उत्पादक क्षेत्र हैं। इन किसानों पर इसी का उत्पादन बढ़ाने हेतु बल हो और वही उपज खरीदी भी जाय। फराली जलाने और प्रदूषण की समस्या हल हो जायेगी। भारत के हर क्षेत्र की अन्न उत्पादन की दृष्टि से अलग-अलग पहचान है। तटीय अधिक वर्षा वाले क्षेत्र चावल उत्पादन करते हैं। महाराष्ट्र में गन्ना उत्पादन प्रमुख रहा है। उत्तर प्रदेश भी गेहूँ, दालों व गन्ना के लिए प्रसिद्ध है। इसी प्रकार साग-सब्जियों, फल व अन्य जिन्सों के उत्पादन हेतु हमारे यहाँ अलग-अलग तरह की मिट्टी व जलवायु उपयुक्त है। उत्पादन भी बढ़ेगा और सारे देश के उत्पादन का अनुमान भी सरल होगा। होता यह है कि आलू महँगा बिक गया तो आलू और प्याज महँगा बिका तो प्याज बोना शुरू हो जाता है और फिर उत्पाद के ढेर सड़कों के किनारे सड़ते हैं। इस पर सुयोजित कार्य होना चाहिये। हमारे यहाँ तो स्वार्थ सर्वोपरि है। जो किसी बात का एक समय समर्थन करते हैं वे ही दूसरे समय उसका विरोध करने लगेंगे।

आशा करनी चाहिये कि राजनेताओं, सरकार व किसान सभी को सद्बुद्धि आयेगी और सभी मिल-बैठकर देश हित में सोचेंगे मात्र अपने-अपने निहित संकीर्ण स्वार्थ के लिये नहीं।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

क्या शेयर बाजार कभी आम आदमी के निवेश की पहली पसंद बन पाएगा?

डॉ. पी.एस. वोहरा

भारतीय शेयर बाजार अब तक आम भारतीयों के बीच अपनी विश्वसनीयता को स्थापित नहीं कर पाया है। नवंबर महीने में हुई वित्तीय उठापटक ने इस बात को फिर साबित किया है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था विकास की जिस पगडंडी पर खड़ी है, वहां एक आम भारतीय के वित्तीय निवेश को पूंजी बाजार के माध्यम से कंपनियों की तरफ प्रवाह देना अत्यंत आवश्यक है। 90 के दशक के आर्थिक सुधारों के बाद निजीकरण के माध्यम से औद्योगिकीकरण व सर्विस सेक्टर ने अर्थव्यवस्था को आर्थिक विकास के एक नए स्तर पर पहुंचाया है। उसके परिणाम स्वरूप एक आम भारतीय के आर्थिक स्तर में काफी वृद्धि हुई थी।

एक तरफ जहां उसे रोजगार के नये अवसर मिले तथा वित्तीय आय भी लगातार बढ़ती चली गई। वहीं दूसरी तरफ उस की क्रय क्षमता भी लगातार बढ़ी। इस दौरान उसने वित्तीय निवेश की तरफ भी अपना मुख मोड़ा परंतु प्राथमिकता बैंकिंग को ही दी क्योंकि उसे वह सदैव सबसे सुरक्षित लगता है। यानी कि स्टॉक मार्केट वित्तीय निवेश के लिए एक आम भारतीय के लिए पसंद का स्थान नहीं रहा है।

90 के दशक के आर्थिक सुधारों के बाद से भारतीय शेयर बाजार ने ऐतिहासिक सफलताएं अर्जित की है। 30 वर्षों में मुंबई स्टॉक एक्सचेंज का सेंसेक्स 60,000 का दायरा पार कर चुका है। शेयर बाजार की ये जबरदस्त सफलता प्रारंभिक स्तर पर हर किसी को यह विश्वास दिलाती है कि आम भारतीय अपने वित्तीय निवेश के लिए भारतीय शेयर बाजार को दिल से अपना रहा है। वास्तविकता में ये सच्चाई नहीं है। विभिन्न रिपोर्ट के आंकड़ों के मुताबिक 140 करोड़ की आबादी वाले भारत के मात्र 3 प्रतिशत व्यक्ति ही प्रत्यक्ष रूप से कंपनियों की इक्विटी शेयर कैपिटल में शेयर बाजार के माध्यम से निवेश करते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि एक आम भारतीय शेयर बाजार को वित्तीय निवेश के लिए अपनी प्राथमिकता में नहीं रखता है। यह बात अर्थव्यवस्था के दीर्घकालीन आर्थिक विकास के लिए बड़ी घबराहट पैदा करती है क्योंकि अर्थव्यवस्था का विस्तार तभी हो पाएगा जब भारत की कंपनियों को विस्तार करने का मौका मिलेगा। देश के आर्थिक विकास व स्वयं की आर्थिक प्रगति के लिए एक आम भारतीय भी इस बात को समझता है कि कंपनियों के मुनाफे में वृद्धि अत्यंत आवश्यक है। इसके बावजूद वह शेयर बाजार को इसलिए प्राथमिकता नहीं देता है क्योंकि शेयर बाजार की उठापटक उसे सदैव आर्थिक नुकसान के लिए आशंकित करती रहती है।

वर्तमान वर्ष 2021 भारतीय शेयर बाजार के लिए बहुत आकर्षक रहा है। कोरोना के आर्थिक संकटों से उभरने के बाद जिस तरह से तेजी शेयर बाजार ने दिखाई उससे एक तरफ सरकार को भी आर्थिक सहारा मिला वहीं पर वित्तीय निवेशकों व आम आदमी ने भी यह समझा कि आर्थिक रूप से अर्थव्यवस्था सुरक्षित है। बड़ा आश्चर्य हुआ जब कोरोना की दूसरी लहर से निपटने के दौरान ही जुलाई के माह में शेयर बाजार में आईपीओ की झड़ी सी लग गई थी। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2007 के बाद पहली बार वर्ष 2021 में इतने ज्यादा आईपीओ भारतीय पूंजी बाजार में आये। इस दौरान निवेशकों ने भी खूब विश्वास रखा। परिणाम स्वरूप शेयर बाजार निवेशकों को अच्छा मुनाफा भी दे रहा था तथा ऐसा लग रहा था कि इससे एक आम भारतीय के बीच में विश्वसनीयता अब लगातार बढ़ेगी। नवंबर आते-आते यह विश्वसनीयता एकाएक फिर से धोखा दे गयी। एक आम भारतीय निवेशक फिर से शेयर बाजार में धोखा खा गया। यह बात नवंबर के महीने में मुंबई स्टॉक एक्सचेंज के सेंसेक्स की गिरावट व नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के निफ्टी में गिरावट से समझ आती है। एक नवंबर को सेंसेक्स 60138 पॉइंट पर बंद हुआ था वहीं पर यह 30 नवंबर को 57064 पर बंद हुआ अर्थात पूरे माह में सेंसेक्स 3074 पॉइंट गिरा। इसी दौरान 22 नवंबर की 1688 पॉइंट की गिरावट तो निवेशकों में हाहाकार मचा गई थी। इसी तरह एनएसई के निफ्टी में पूरे माह में 946 पॉइंट की गिरावट दर्ज हुई जबकि 22 नवंबर को यह भी 516 पॉइंट नीचे बंद हुआ था।

यह भी कितनी अजीब सी बात है कि जब इन बाजारों में गिरावट का दौर आता है तो विभिन्न नामी-गिरामी विशेषज्ञ उसे भारतीय शेयर बाजार की जरूरत बताते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि कुछ कंपनियों के मूल्य बहुत ऊपर जा चुके थे इसलिए गिरावट स्वभाविक है। क्या इसे वो आम भारतीय समझ सकता है जिसने अपनी अर्थव्यवस्था में विश्वास रखते हुए अपनी छोटी-छोटी बचत को जोड़कर एक अच्छी लाभदायकता के लिए फिर से शेयर बाजार में निवेश किया था? नहीं, वो कभी नहीं समझेगा। विशेषज्ञ तो इस गिरावट में कई आर्थिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मुद्दों को भी जोड़ देते हैं। परिणाम स्वरूप आम भारतीय अपने साथ हुए इस आर्थिक छलावे को अपना दुर्भाग्य मानता है।

इस पक्ष पर यह समझना भी अत्यंत आवश्यक है कि क्या भारतीय समाज में शेयर बाजार के प्रत्यक्ष निवेशक इसलिए बहुत कम है क्योंकि इस बाजार में सिर्फ नुकसान ही होता है। यह पूर्णतया गलत अवधारणा है। वह व्यक्ति जो निवेशक नहीं है उसे शेयर बाजार की ओर विश्वसनीयता के ना चलते इसमें वित्तीय निवेश करने से दूर रखती है।

अब अगर नवंबर माह की ही बात की जाए तो भारत के इन दिनों मशहूर स्टार्टअप पेटीएम जब आईपीओ के माध्यम से शेयर बाजार में आता है तो उसे निवेशकों के द्वारा खूब प्रोत्साहन मिलता है परंतु शेयर बाजार में यह कंपनी निवेशकों के भरोसे को बरकरार नहीं रख पाई तथा 22 नवंबर को हुई भयंकर गिरावट में एक बड़ा कारण भी साबित हुई। 2150 रुपए के प्रारंभिक मूल्य का एक शेयर मुंबई स्टॉक एक्सचेंज पर उन्नीस सौ 50 पर दर्ज हुआ जिसने निवेशकों को प्रति शेयर करीब 9 प्रतिशत का घाटा दिया। उस प्रारंभिक घबराहट के बाद पेटीएम का शेयर लगातार नीचे आता रहा तथा एक शेयर पर 400 का घाटा दे गया। इस दशा में आम आदमी के इस नुकसान का जिम्मेदार किसे ठहराया जाए। जबकि कुछ दिनों पूर्व ही एक और मशहूर स्टार्टअप जमाटो ने पहले दिन ही 52 प्रतिशत का मुनाफा दिया था।

भारतीय शेयर बाजार की विश्वसनीयता के संबंध में पूर्व अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री का वक्तव्य बड़ा खरा सा प्रतीत होता है कि शेयर बाजार के विकास को अर्थव्यवस्था के विकास के साथ नहीं जोड़ कर देखा जा सकता है। यह भी सच्चाई है कि जब शेयर बाजार ऊंचाई के रुख की तरफ होता है तो यह अर्थव्यवस्था में सकारात्मकता को दर्ज कराता है और वैश्विक निवेश के पक्ष पर भी यह एक प्रत्यक्ष आकर्षण का स्त्रोत होता है। जबकि शेयर बाजार में गिरावट का दौर होता है तो उसे कई दूसरे आयामों से भी जोड़ा जाता है जैसे कि नवंबर के माह में भी यह कहा गया कि कोरोना की पुन: वापसी, विदेशी निवेशकों की बिकवाली, कृषि दिनों की वापसी आदि कई ऐसे कारण थे जिनसे शेयर बाजार में गिरावट दर्ज हुई थी। विश्लेषणात्मक पक्ष को समझने वाला आम व्यक्ति तो यह समझ सकता है कि गिरावट सदैव नहीं रहती है गिरावट के बाद ऊंचाई है तथा ऊंचाई भी सदैव नहीं रहती है ऊंचाई के बाद फिर गिरावट है। लेकिन एक आम निवेशक इन बातों को कभी नहीं समझ पाता है तथा वित्तीय घाटा होने पर उसे भारतीय शेयर बाजार की विश्वसनीयता बहुत अखरती है इस कारण ही वह सदैव सुरक्षित वित्तीय निवेश को प्राथमिकता देने को सोचता है और उस दशा में बैंकिंग उसकी प्राथमिकता में सदैव रहता है।

–डॉ. पी.एस. वोहरा
(शिक्षाविद, प्रखर चिंतक व लेखक)

पर्यटकों से गुलज़ार होंगे शेखावाटी विरासत स्थल

रींगस, (निसं)। शौर्य, शक्ति व भक्ति के प्रतिक शेखावाटी के कण कण में विरासत भरी पड़ी है। शेखावाटी की ऐतिहासिक विरासत धरोहर, भवन कला, भित्ति चित्र, हवेलियां, बावड़िया, किले, महल, तालाब, रमणीक स्थल सहित अनेक चीजों को संजो रखी हैं।

पूरे शेखावाटी में घूमने के लिए पर्यटकों को एक माह का समय भी कम पड़ता है। लेकिन कोरोना काल में पर्यटकों की कमी ने पर्यटन विभाग को फिर से सोचने पर मजबूर कर दिया। पर्यटन विभाग ने इसी मौके का फायदा उठाते हुए पूरे शेखावाटी को देश विदेश तक विख्यात करने के लिए कमर कस ली है। यहां के किले, भवन, हवेलियां, भित्ति चित्र, महलों को लोकप्रिय बनाने के लिए देश के विख्यात ट्रेवल ब्लॉगरों के माध्यम से यहां की कला को पर्यटकों से रूबरू करवाने के लिए प्रचार-प्रसार की पहल की है।

पर्यटक विभाग की संयुक्त निदेशक अनु शर्मा के नेतृत्व में ट्रैवर्ल ब्लॉगरो की टीम ने पिछले दिनों शेखावाटी के अनेक शहरों का दौरा कर विरासतों का अवलोकन कर उनकी विशेषताओं का फिल्मांकन किया था। देशी-विदेशी पर्यटकों को लुभाने के लिए इन विशेषज्ञों को बुलाया गया। ब्लॉगर, राइटरों की टीम विरासतों की खूबियों को सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया में प्रचार प्रसार करेंगी। इसका फायदा यह होगा की शेखावाटी में देशी-विदेशी पर्यटकों की संख्या में इजाफा होगा।

शेखावाटी में दो दर्जन से अधिक पर्यटक स्थल : शेखावाटी में भित्ति चित्रों से सुसज्जित कलात्मक हवेलियां, किले, महल, छतरियां, मंदिर हैं जिन्हें पर्यटक देख कर आश्चर्य में डूब जाते हैं। इन्हें पहचान दिलाने में पर्यटक विभाग ने पहल की है। नवलगढ, मण्डावा, रामगढ़ शेखावाटी, फतेहपुर, लक्ष्मणगढ़, मुकुन्दगढ, छापर, डूंडलोद, अलसीसर, महनसर, मलसीसर, खेतड़ी, सिंघाना, सुजानगढ, लाडनू, सीकर चूरू, रतनगढ, सरदारशहर बगड़, चिड़ावा, राजलदेसर, सुजानगढ़, हर्ष, खण्डेला, सीकर, छापर आदि विख्यात पर्यटक स्थल है। इसके अलावा अनेक ऐसे गांव हैं जहां पर भी यह विरासतें भरी पड़ी है। पर्यटन विभाग के विरासत गांवों में पर्यटकों को लुभाने से यहां की आर्थिक स्थिति में इजाफा होगा।

पेइंग गेस्ट योजना बढ़ाएगी आमदनी : राज्य सरकार ने हाल ही में पेइंग गेस्ट योजना लागू की है। यहां भने कलात्मक भवन मालिक ऐसी ही योजना की कल्पना कर रहे थे ताकि उन्हें कागजी कार्यवाही कम करनी पड़े।

गो संरक्षण के लिए साधु-संतों ने पदयात्रा निकाली

भरतपुर में साधु-संतों की विशाल पदयात्रा का आयोजन किया।

भरतपुर, (निसं)। गौ संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं शहर की जीवन दायनी नहर सुजान गंगा के संरक्षण को लेकर शनिदेव विकास समिति किला एवं सुजान गंगा बचाओ संघर्ष समिति के संयुक्त तत्वावधान में साधु-संतों की विशाल पदयात्रा का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 600 साधु-संतों ने हिस्सा लिया।

सर्वप्रथम बड़े हनुमान जी मंदिर रुदावल के महंत श्री श्री 1008 बाबा राम दास महाराज के नेतृत्व में पद यात्रा का शुभारंभ किला स्थित बागड़ वाले हनुमान जी मंदिर से हुआ। यह पदयात्रा चौबुर्जा, लक्ष्मण मंदिर, कोतवाली, बासन गेट होकर सुजान गंगा नहर की परिक्रमा करते हुए शनि देव मंदिर पहुंची। शहर वासियों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर साधु-संतों का स्वागत किया।

चाकसू में सरकारी स्कूल के खेल मैदान पर बजरी-पत्थर विक्रेताओं का कब्जा!

चाकसू, (निसं)। केंद्र एवं राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी हुई खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने, समुचित सुविधाएं एवं प्रशिक्षण प्रदान कर निखारने के लिए विभिन्न प्रकार के आयोजन कर रही है। दुर्भाग्य की बात यह है कि पंचायत मुख्यालय स्तर पर सीनियर सेकंडरी स्कूल आरम्भ तो कर दिए गए लेकिन खेल मैदान उपलब्ध नहीं करवाए गये। अनेक जगह सरकार ने खेल मैदान के लिए भूमि आवंटित तो कर दी लेकिन विद्यालय प्रबंधन की लापरवाही अथवा सरकार की उदासीनता के चलते आम लोगों ने अपने कब्जे जमा लिए। इनको खाली करवाने का साहस न तो प्रधानाचार्य ले रहे हैं और न ही जनप्रतिनिधि, हर एक के अपने-अपने स्वार्थ आहत होते लगते हैं। बालकों में आउटडोर गेम्स में रूचि उत्पन्न करने वाले शिक्षक ही नहीं रहे। कहने को तो सरकार ने विद्यालय में शारीरिक शिक्षक लगा रखे हैं लेकिन उनको अन्य कार्यों में व्यस्त रखा जा रहा है।

चाकसू सरकारी विद्यालय के खेल मैदान की दुर्दशा बजरी पत्थर विक्रेताओं का हो रहा है कब्जा

- **नगरपालिका ने भी अपने ठेकेदारों को मिक्सिंग प्लांट शुरू करने की इजाजत दे रखी है**
- **दशकों पहले इस मैदान पर फुटबॉल, वालीबॉल, हॉकी, कबड्डी, खो-खो के खिलाड़ियों की चहल-पहल रहा करती थी**

चाकसू में राजकीय सीनियर सेकंडरी स्कूल का मुख्य सड़क किनारे, नगरपालिका कार्यालय के दक्षिणी दिशा में एक बेहतरीन खेल मैदान विरासत में मिला हुआ है। दुर्भाग्य यह रहा कि नगरपालिका प्रशासन ने इस मैदान को खेल मैदान रहने ही नहीं दिया। विभिन्न गतिविधियों का केंद्र बन कर रह गया। दशकों पहले शाम को इस मैदान पर फुटबॉल, वालीबॉल, हॉकी, कबड्डी, खो-खो के खिलाड़ियों की चहल-पहल रहा करती थी। सवेरे-सवेरे मॉर्निंग वाक करते वयोवृद्ध एवं अभ्यास करते युवा मिल जाते थे। वर्तमान समय में विद्यालय के शिक्षकों, प्रिंसिपल आदि की घोर उपेक्षा का शिकार यह खेल मैदान धीरे-धीरे सिकुड़ता जा रहा है। आसपास के व्यापारियों ने भवन-निर्माण सामग्री डालकर अपना धंधा शुरू कर दिया। किसी भी अधिकारी को रोकने-टोकने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। हालात इतने बद से बदतर कर दिए कि नगरपालिका ने कस्बे में ही ही रोड निर्माण के लिए अपने ठेकेदारों को मैदान में मिक्सिंग प्लांट शुरु करने की इजाजत दे दी। मैदान की हालत यह है कि सुरक्षा दीवार के अभाव में यह मैदान बालकों के खेलने, अभ्यास करने अथवा मोर्निंग वाक करने लायक भी नहीं रहा। विगत बरसात में तो मनोहरा तालाब का अतिरिक्त पानी ही इसी मैदान को चीरता हुआ निकला है। अभी भी मैदान के बीच से आसपास के दुकानदारों का गंदा पानी बह रहा है। नगरपालिका की तरफ से बने शौचालय कबाड़ में तब्दील हो गए। राजकीय सीनियर सेकंडरी स्कूल के प्रधानाचार्य रामलाल मीणा, विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति को इतना समय तक नहीं मिल रहा कि विरासत में मिले इस मैदान की रक्षा एवं सुरक्षा कर बालकों को खेलने लायक मैदान सुलभ करवा दे। विधायक वेदप्रकाश सोलंकी कभी मिनी स्टेडियम की घोषणा करते हैं तो कभी सर्व सुविधायुक्त खेल स्टेडियम की। वास्तव में जमीन पर कुछ भी नहीं है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 18 दिसम्बर, 2021

मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2078, रोहिणी नक्षत्र दिन 1:48 तक, साध्य योग प्रात: 9:12 तक, वणिज करण प्रात: 7:25 तक, चन्द्रमा रात्रि 3:21 पर मिथुन राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-कुम्भ, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

रवियोग दिन 1:48 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 1:48 तक है। भद्रा प्रात: 7:25 से रात्रि 8:45 तक है। आज रोहिणी व्रत (जैन) है। आज चतुरदशी तिथि में वृद्धि होगी। आज चान्द पूर्णिमा व्रत, श्री दत्तात्रेय जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:31 से 9:44 तक, चर 12:23 से 1:41 तक, लाभ-अमृत 1:41 से 4:15 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:14, सूर्यास्त 5:32

मेष

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

मिथुन

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में योजना बनेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या

धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ

परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।